ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-8* October- 2020
Innovation The Research Concept

शर्कीकालीन वास्तुकला
Sharaki Architecture

Paper Submission: 10/10/2020, Date of Acceptance: 20/10/2020, Date of Publication: 21/10/2020

अम्बरीश मिश्र
प्रवक्ता,
इतिहास विभाग,
भवानी प्रसाद पाण्डेय पी0जी0 कालेज, करीमनगर, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

''वास्तुकला मानव जीवन की रीति–रिवाज की कहानी है, यह उस समाज का वर्णन करता है जिसमें इसका निर्माण हुआ है। जिस प्रकार प्रत्येक राष्ट्र अपनी भाषा में अपना इतिहास कहता तथा लिखता है, ठीक उसी प्रकार प्रत्येक इमारत अपने निर्माणकर्ता के व्यक्तित्व तथा राष्ट्र की छाप को प्रकट करती है। वास्तुकला उस युग की सभ्यता और समाज का दर्पण है किसी भी युग के वास्तविक इतिहास का अनुमान उस युग की निर्मित इमारतों से लगाया जा सकता है। जिस मनुष्य ने मन्दिर, पुल, जलाशय, कारवाँ, सराय तथा जनोपयोगी इमारतों का निर्माण किया है, वह इतिहास के पन्नों में अमर है।''[1]

Architecture is the story of the customs of human life, it describes the society in which it was built. Just as each nation tells and writes its history in its own language, similarly each building reveals the personality of its builder and the impression of the nation. Architecture is the mirror of civilization and society of that era, the real history of any era can be estimated from the buildings built in that era. The man who built temples, bridges, reservoirs, caravans, inns and public utilities is immortalized in the pages of history. "[1]

मुख्य शब्द : शिराज, मिश्रित शैली, शर्कीकालीन, वास्तुकला, मुहम्मद खाँ, अटाला मस्जिद, हिंदू मुस्लिम शैली।
Shiraz, Mixed Style, Sharqi, Muhammad Kha, Atala Masjid, Hindu Muslim Style.

प्रस्तावना

मध्यकाल में जौनपुर ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्वपूर्ण था। सन् 1359 ई0 में फिरोजशाह तुगलक बंगाल के शासक सिकन्दर शाह द्वितीय के विरुद्ध सैनिक अभियान में जाते समय मनहेच, जफराबाद रुका था। मनहेच जिसका शाब्दिक अर्थ विद्या भूमि है, यह जौनपुर शहर से लगभग 08 किलोमीटर पूरब दिशा में गोमती नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है।[2]

''जफराबाद प्रवास के दौरान सुल्तान फिरोज तुगलक गोमती नदी में नाव पर बैठकर गढ़आसनी के किले के पास पहुँचा, उसे यहाँ के प्राकृतिक दृश्य बहुत ही मनोहारी लगे। वह इस स्थान की सुन्दरता से प्रभावित होकर यहाँ एक सुन्दर शहर बनाने का निश्चय किया। वह इस स्थान पर एक सुन्दर शहर का निर्माण करवाया तथा इसका नाम अपने चचेरे भाई जूना खाँ की याद में जूनापुर रखा, जो बाद में जौनपुर के नाम से विख्यात हुआ।''[3]

सुल्तान फिरोज शाह तुगलक के पौत्र सुल्तान महमूद शाह तुगलक ने 1394 ई0 में अपने वजीर मलिक सरवर ख्वाजाजहाँ को मलिक उस–शर्क (पूर्वी प्रान्त का स्वामी) की उपाधि से विभूषित कर जौनपुर का शासनभार सौंपा। इसी बीच तैमूर आक्रमण ने दिल्ली सल्तनत की रही सही प्रतिष्ठा भी समाप्त कर दी जिसका लाभ उठाकर 1394 ई0 में मलिक सरवर अपने को जौनपुर का स्वतंत्र शासक घोषित करते हुए जौनपुर में शर्की राजतंत्र की नींव डाली और शर्की सल्तनत जौनपुर, दिल्ली सल्तनत से अलग होकर 111 वर्षों तक अपना अलग आस्तित्व बनाये रखा।[4] सुल्तान उस शर्क मलिक सरवर अतावक–ए–आजम (यह ईरान के बड़े बादशाहों की उपाधि थी, जिनकी राजधानी शीराज शहर था) की उपाधि धारण कर शर्की राज्य के सिंहासन पर बैठा। सुल्तान–उस–शर्क के अनेक प्रतिष्ठित एवं उच्च कोटि के विद्वानों को जो दिल्ली छोड़कर आये जौनपुर में शरण दिया, उसने अपनी हिन्दू एवं मुस्लिम जनता के लिए अनेक खानख्वाहों एवं मदरसों का निर्माण करवाया।''[5] 1399 ई0 में सुल्तान उस–शर्क मलिक सरवर की मृत्यु के पश्चात् उसका बेटा मलिक मुबारक करनफाल सल्तनत के

अमीर एवं सरदारों की सम्मिलित राय से सुल्तान मुबारक शाह शर्की की उपाधि धारण कर शर्की राज्य सिंहासन पर बैठा। 1401 ई0 में मुबारक शाह शर्की की मृत्यु के पश्चात् सल्तन् के अमीरों एवं सरदारों ने उसके छोटे भाई शमसुद्दीन खाँ को सुल्तान इब्राहिम शाह शर्की की उपाधि से विभूषित कर जौनपुर के राज्य सिंहासन पर बैठाया। इसने अपने शासनकाल में विभिन्न युद्धों द्वारा साम्राज्य की सीमा का विस्तार उत्तर में बुलन्दशहर और सम्भल तथा पूर्व में बंगाल तथा दक्षिण में काल्पी तक किया।[6] इस मस्जिद के बुनियाद का प्रथम पत्थर तत्कालीन आध्यात्मिक संत मख्दूम चिराग–ए–हिन्द जफराबादी के हाथ रखा गया।[7] ''अटाला मस्जिद के निर्माण में मिश्र एवं यूनान से भी कारीगर बुलाये गये थे। शर्की सुल्तानों की यह इच्छा थी कि जौनपुर में तुगलकी वास्तुकला से भी उच्च श्रेणी और सुन्दर वास्तुकला की स्थापना की जाये जो विश्व में महत्वपूर्ण स्थान स्थापित करे। दिल्ली से जो कारीगर इस मस्जिद के निर्माण के लिए यहाँ आये थे उनमें प्रमुख थे अकरमुल्लाह, शमसुद्दीन, चिरागन, कासिम अली, वाहिद खाँ और मुंशीबख्श तथा हिन्दू कारीगरों में पूर्णमासी, राम कबीर तथा संत बख्श सिंह इत्यादि प्रमुख थे।''[8]

अटाला मस्जिद जौनपुरी वास्तुशैली का पुराना नमूना है। आयतों में लिखा है कि मुहम्मद साहब कहते हैं कि जो कोई अल्लाह के सम्मान में मस्जिद का निर्माण करवायेगा, उसके लिए अल्लाह जन्नत (स्वर्ग) में घर बनवायेगा। जो अल्लाह और न्याय के दिन पर विश्वास रखता है, जो नमाज कायम रखता है और अदा करता है, जो अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरता वह कयामत के दिन दाहिने तरफ के लोगों में से होगा।''[9]

शर्की कालीन मस्जिदें जो शर्की वास्तुकला की विरासत के रुप में आज भी विद्यमान है वे साधारण पत्थर चूने, गारे और कांकरीट से बनी हुई है। शर्कीकालीन मस्जिदों में जौनपुर की अटाला मस्जिद सर्वाधिक अलंकृत एवं सुन्दर है। 1359 ई0 में फिरोज शाह तुगलक ने जौनपुर शहर के निर्माण का आदेश दिया था तो इस टीले को समतल कर वर्तमान शाही किले का निर्माण करवाया गया और इस किले का नाम करारवीर या करारकोट पड़ा। इसके निकट का मुहल्ला भी करारकोट के नाम से जाना जाता है। यह किला सैनिक दृष्टिकोण इतना विशाल है कि हाथियाँ सुगमता से आ–जा सकती है, धरातल से इसकी ऊंचाई 62.5 फीट और चौड़ाई 61 फीट है। इस द्वार का तोरण स्तम्भ पाँच मेहराबदार मंजिलों में बंटा है। इन मेहराबों में अलंकृत पट्टियाँ लगी हुई है, प्रत्येक मंजिल का अगला भाग चोटी के समान है।''[10] ''रायबरेली का किला सर्वप्रथम एक हिन्दू किला था लेकिन 1417 ई0 में जब इब्राहिम शाह शर्की ने रायबरेली नगर को बसाया तो उसी समय इस किले को नये ढंग से बनवाया। यह किला एक मिट्टी के टीले पर चारो तरफ से घेराबन्दी किया हुआ चतुर्मुखी आकृति का है। किले का मुख्य भाग यह प्रदर्शित करता है कि सैन्य व्यवस्था के दृष्टिकोण से इसका निर्माण कराया गया था।''[11]

''शर्कियों द्वारा निर्मित तीसरा किला जो ईंटों से बना हुआ है उसका खण्डहर आज भी नसरीदाबाद (जायस तहसील जिला रायबरेली) के दक्षिण पूर्व में स्थित है इस किले का निर्माण सुल्तान इब्राहिम शाह शर्की ने अपने पुत्र नसीरुद्दीन की स्मृति में बनवाया था। शर्कियों का चौथा किला डलमऊ में गंगा नदी के किनारे स्थित है, इसकी छतें नक्काशी, द्वार खम्भों तथा आकर्षक डिजाइनों से युक्त मेहराबों पर टिकी हुई है।''[12]

सुल्तान इब्राहिम शाह शर्की ने इन महलों का निर्माण प्रसिद्ध अभियन्ता मुहम्मद खाँ की देखरेख में कराया गया था। अपने वास्तुशिल्प कला से शर्की राजमहलों एवं मस्जिदों तथा अन्य स्मारकों के निर्मित कराने में भरपूर सहयोग किया था।''[13]

इससे हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि शर्की वास्तुकला भारतवर्ष की नहीं वरन विश्व के प्रथम श्रेणी के वास्तुकला में अपना स्थान रखती है।

समीक्षा

विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से जब हम इसकी समीक्षा करें तो स्पष्ट होता है कि– ''शर्की राजवंश राजनीतिक दृष्टिकोण के साथ ही साथ सांस्कृतिक एवं कलात्मक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं, इसकी राजधानी जौनपुर भव्य इमारतों एवं वास्तुकला के क्षेत्र में हिन्दू–मुस्लिम शैली के जन्मदाता के रुप में मध्यकालीन इतिहास में अपना एक विशेष स्थान रखता है। भवन निर्माण के क्षेत्र में यह मिश्रित शैली हिन्दुओं और मुसलमानों के मध्य सांस्कृतिक सम्बन्ध का प्रतीक है। शिक्षा के क्षेत्र में यह क्षेत्र अन्यतम है। एक उच्चतर शैक्षिक केन्द्र के रुप में मध्यकालिन भारतीय इतिहास में इसे–शीराज–ए–हिन्द (भारत के विद्वानों का समागम स्थल) होने का गौरव प्राप्त है। शर्की सुल्तान सर्वाधिक वास्तुकला प्रेमी थे, इसलिए इनके शासनकाल 1394–1505 ई0 के बीच महलों, खानख्वाहों तथा मकबरों का निर्माण हुआ।''[14] ''धार्मिक दृष्टिकोण से भी शर्की शासक उदार मनोवृत्ति के थे, जौनपुर के शर्की शासकों के अन्तर्गत हिन्दुओं ने जिस स्वतंत्रता का उपभोग किया वह निश्चित रुप से भक्ति आन्दोलन के विकास का एक महत्वपूर्ण कारण सिद्ध हुआ। शर्की शासनकाल में फारसी साहित्य के साथ–साथ हिन्दी साहित्य की भी प्रगति हुई। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में कबीर दास, विद्यापति, शेख कुतबुन, शेख मंझन का योगदान विशेष रुप से उल्लेखनीय है। शर्की शासकों ने हिन्दी साहित्य की प्रगति में पर्याप्त रुचि ली और हिन्दू कवियों तथा विद्वानों को संरक्षण देकर अपनी उदार धार्मिक प्रवृत्ति का परिचय दिया।''[15]

शर्की कालीन मस्जिदों, किलों, मकबरों एवं मजारों के वास्तुकला के क्षेत्रों में विभिन्न विद्वानों के दृष्टिकोण के अनुसार विश्लेषण करने से कई विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैः–

1. ''शर्की स्थापत्य कला की प्रमुख विशेषता इसकी मस्जिदों में प्रयुक्त किया गया तोरण द्वार है। तोरण द्वारों की भव्यता एवं विशालता ही शर्की स्थापत्य कला की विशेष पहचान है। इन तोरण द्वारों में मेहराबी व्यवस्था का प्रचलन कर शर्की अभियन्ताओं ने जौनपुर के इमारतों के बनावट में चार चाँद लगा दिया, इसी तरह शर्की वास्तुकला में कंगूरेदार दीवालें,

मेहराबनुमा गैलरियाँ, गुम्बदीय बुर्ज तथा मेहराबी कक्ष है जो तुगलक कालीन भवनों से मिलती है।''[16]

2. ''जौनपुर की सभी मस्जिदें अटाला मस्जिद के नमूने पर ही बनायी गयी हैं। शर्की वास्तुकला का अन्तिम उदाहरण जौनपुर की जामा मस्जिद जो सुल्तान हुसैन शाह शर्की द्वारा बनाई गयी है। इनके गुम्बदों के ऊपर बने कमल के फूल हिन्दू–मुस्लिम मिश्रित वास्तुकला का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।''[17]
3. ''शर्की वास्तु कला की विशिष्टताओं को मुगलों द्वारा अंगीकार किया गया। शर्कियों द्वारा निर्मित तोरण द्वार को आधार मानकर मुगल सम्राट अकबर ने फतेहपुर सीकरी में बुलन्द दरवाजा का निर्माण करवाया। शर्कियों द्वारा प्रयुक्त किये गये गुम्बदीय छत की नकल भी मुगलों द्वारा की गयी जिसका ज्वलन्त उदाहरण जौनपुर के मुहल्ला मियाँपुर में गोमती नदी के बाँयी किनारे पर मुगल सम्राट शाहजहाँ के पुत्र दाराशिकोह द्वारा निर्मित ''मस्जिद शिकोह'' है।''[18]
4. ''शर्कियों की वास्तुकला का केवल मुस्लिम मस्जिदों एवं भवनों पर ही नहीं प्रभाव पड़ा बल्कि इसका प्रभाव मथुरा में निर्मित गोविन्द देव के मन्दिर में भी स्पष्ट रुप से देखा जा सकता है। इस मन्दिर की छत जौनपुर के जामा मस्जिद से मिलती जुलती है। इसी तरह शर्कियों के मेहरावी व्यवस्था का प्रयोग अकबर महन ने जौनपुर में गोमती नदी पर निर्मित शाही पुल में किया है। इस शाही पुल के स्तम्भी मेहराब की शक्ल शर्कियों की मस्जिदों में प्रयुक्त मेहराबी द्वार से मिलता है।''[19]

अध्ययन का उद्देश्य

मुस्लिम शासकों के आगमन के फल स्वरुप भारतीय स्थापत्य कला के क्षेत्र में जिस नवीन शैली का विकास हुआ उसे इण्डो इस्लामिक शैली कहा गया। तुर्को के आगमन से हिंदू शैली तुर्को की वास्तुशैली के समन्वय से एक नवीन वास्तु शैली निर्मित हुई। जिससे उस काल के सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक इतिहास का स्पष्ट परिचय प्राप्त होता है।

निष्कर्ष

अन्त में निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि भारतीय परिवेश में शर्की वास्तुकला ने हिन्दू–मुसलमानों की सभ्यता संस्कृति भाषा रीति–रिवाज में विभिन्नता होते हुए भी दोनों ने एक–दूसरे से सामिप्य बनाये रखा। इस तरह शर्की कालीन इमारतें अपने निर्माणकर्ताओं के नाम का स्मरण आज भी कराती हैं और उस समय के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक इतिहास का स्पष्ट परिचय प्रस्तुत करती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *एड्वर्डस एण्ड गैरेट–मुगल रुल इन इण्डिया, दिल्ली, 1956, पृ0सं0 302*
2. *मौलवी खैरुद्दीन–जौरपुरनामा, नासरिया अरबिक कालेज लाइब्रेरी, जौनपुर पृ0सं0 33*
3. *शम्स सिराज अफीफ–तारीख–ए–फिरोज शाही, पृ0सं0 148*
4. *मियाँ मुहम्मद सईद–दी शर्की सल्तनत ऑफ जौनपुर, कराची विश्वविद्यालय पाकिस्तान, 1972 पृ0सं0 30–31*
5. *मुहम्मद कासिम हिन्दू शाह फरिश्ता–तारीख–ए–फरिश्ता भाग दो, पृ0सं0 304*
6. *मौलवी खैरुद्दीन–जौनपुरनामा, पृ0सं0 84*
7. *शैफाली बनर्जी–शर्की सुल्तानों का इतिहास, पृ0सं0 36*
8. *शेख मुहम्मद युसुफ सुहरवर्दी– तजल्लियातेआरफीन, पृ0सं0 45*
9. *ए0 फ्यूहरर–दी शर्की आर्कीटेक्चर ऑफ जौनपुर नेशनल लाइब्रेरी कोलकाता 1887, पृ0सं0 32–33*
10. *निजामुद्दीन अहमद–तवकाते अकबरी भाग एक, पृ0सं0 301*
11. *फ्यूहरर–दिमानूमेन्टल एन्टीक्वीटीज एण्ड इन्स्क्रिप्शन आफ दी एन डब्लू पी एण्ड अवध भाग–2 इलाहाबाद 1891, पृ0सं0 325*
12. *–वही–पृ0सं0 324*
13. *मुहम्मद गौस अली – सलातीने जौनपुर पृ0सं0 24–25*
14. *मौलवी खैरुद्दीन – जौनपुरनामा, पृ0सं0 90*
15. *मियाँ मुहम्मद सईद – दी शर्की सल्तनत ऑफ जौनपुर पृ0सं0 144*
16. *–वही– पृ0सं0 165*
17. *पर्सी ब्राउन – इण्डियन आर्किटेक्चर, पृ0सं0 44*
18. *–वही– पृ0सं0 46*
19. *मियाँ मुहम्मद सदई – दी शर्की सल्तनत आफ जौनपुर पृ0सं0 168*